फर्स्ट कॉलम

■ माय न्यू प्रोडक्ट

सबसे तेज कैमरा

ओलम्पस ने दुनिया का सबसे तेज आटो फोकस डीएसएलआर कैमरा बाजार में उतारा है। 'ओलम्पस ई-3 डीएसएलआर प्रोफेशनल कैमरा' विशेषकर उन फोटोग्राफरों के लिए है जिनके लिए फोटोग्राफी जुनून है। सुपरसोनिक वेव ड्राइव लेंस और एडवांस्ड आटो फोकस सिस्टम की वजह से यह दुनिया का सबसे फास्ट आटो फोकस कैमरा बन सका है। इसकी शटर स्पीड 1/8000 सेकेंड तक हो सकती है। इमेज स्टेबलाइजर, 10 मेगापिक्सल हाईस्पीड एमओएस, 2.5 इंच का मल्टी एंगल हाइपर क्रिस्टल एलसीडी, शेडो एडजस्टमेंट टेक्नोलॉजी और ट्रू पिक्चर थ्री इमेज प्रोसेसिंग इंजिन इसकी अन्य विशेषताएं हैं। लाइव व्यू के अलावा फोटोग्राफर कैमरे के व्यू फाइंडर का भी उपयोग कर सकता है जो 100 फीसदी कवरेज प्रदान करता है। ओलम्पस के अन्य सभी ई-सिस्टम कैमरों की भांति ही इसमें भी डस्ट रिडक्शन सिस्टम लगा हुआ है। इसे प्रारंभिक तौर पर संयुक्त अरब अमीरात में जारी किया गया है और इसकी कीमत है करीब 1900 डॉलर।

■ माय इंवेस्टमेंट

न्यू फंड ऑफर

- आईएनजी इंवेस्टमेंट मैनेजमेंट इंडिया ने 'आईएनजी आप्टिमिक्स ग्लोबल कमोडिटीज फंड' लांच किया है। इस फंड का मुख्य उद्देश्य वैश्विक कमोडिटी इक्विटी फंडों की यूनिट्स में निवेश करके दीर्घावधि पूंजीगत वृद्धि हासिल करना है। इसमें एंट्री लोड 2.50 फीसदी व एक्जिट लोड शून्य है। स्कीम में 25 अगस्त तक निवेश किया जा सकता है।
- सहारा म्यूचुअल फंड ने 'सहारा बैंकिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज' नामक नया फंड जारी किया है। यह ओपन एंडेड सेक्टर फंड है और कम से कम 75 फीसदी राशि बैंकिंग व वित्तीय सेवा क्षेत्र की कंपनियों के इक्विटी व इक्विटी संबंधित सेक्युरिटीज में निवेश की जाएगी। इसमें रिटेल निवेशक के लिए निवेश की न्यूनतम राशि 5,000 रुपए है। यह योजना 26 अगस्त तक खुली रहेगी।

■ माय इंश्योरेंस

बचत-बीमा साथ-साथ

निजी क्षेत्र की बीमा कंपनी मैक्स न्यूयार्क लाइफ ने 'मैक्स विजय' नामक ऐसी बीमा पॉलिसी जारी की है, जो न केवल बीमा का लक्ष्य पूरा करती है, बल्कि दीर्घावधि में बचत का जरिया भी बनेगी। यह पॉलिसी तीन प्रीमियम सेगमेंट- रजत, स्वर्ण और हीरा में उपलब्ध है। इनमें न्यूनतम प्रीमियम राशि क्रमशः 1000, 1500 और 2500 रुपए रखी गई है। स्कीम के दौरान पॉलिसीधारक की प्राकृतिक मौत होने पर उसके नामिनी को गारंटीड सम ऐश्योर्ड राशि के साथ पॉलिसीधारक के एकाउंट में जमा राशि मिलेगी। यह एकाउंट एक तरह से सेविंग एकाउंट की तरह काम करेगा। दुर्घटना में मृत्यु होने पर सम ऐश्योर्ड राशि दुगुनी मिलेगी। इस पॉलिसी की एक विशेषता यह भी है कि इसमें पॉलिसीधारक को निवेश का विकल्प चुनने का भी अवसर रहेगा। यह पॉलिसी 10 साल की अवधि की है और इसके समाप्त होने पर पॉलिसीधारक को उसके एकाउंट में एकत्र राशि निवेश में प्राप्त रिटर्न के साथ वापस कर दी जाएगी।

■ माय बुक

ट्रेंड्स से मुनाफा

शेयर बाजार की ट्रेडिंग में चार्ट्स का विशेष महत्व है। समझदार निवेशक इन चार्ट्स के माध्यम से भी अच्छा मुनाफा कमा सकता है। बाजार से जुड़े विशेषज्ञों अश्विनी गुजराल व प्रसन्ना खेमरिया अपनी पुस्तक 'हाउ टु मेक मनी ट्रेडिंग विद चार्ट्स' में यही बताते हैं। यह संभवतः ऐसी पहली समग्र पुस्तक है जिसमें भारतीय शेयर बाजार के सजीव उदाहरण लेकर चार्ट्स के पैटर्न व इनका विश्लेषण पेश किया गया है। इसमें 150 से भी अधिक चार्ट्स का विश्लेषण कर बताया गया है कि कैसे इन चार्ट्स में छिपे संकेतों को समझकर लाभ कमाया जा सकता है। 320 पेज की इस किताब की कीमत 595 रुपए है।

कच्ची उम्र पक्का मकान

रिजर्व बैंक द्वारा सीआरआर व रेपो रेट में बढ़ोतरी के बाद कई बैंकों ने भी होम लोन की ब्याज दरों में वृद्धि कर दी है। इससे लोन लेने वाले पुराने ग्राहकों की दिक्कतें तो बढ़ेंगी ही, साथ ही लोन लेने के इच्छुक नए ग्राहक भी हतोत्साहित होंगे। वैसे मुद्दे की बात यह है कि अगर युवावस्था में ही मकान ले लिया जाए तो ईएमआई बढ़ने के बावजूद आप नुकसान में कतई नहीं रहेंगे।

राग वामदत्त

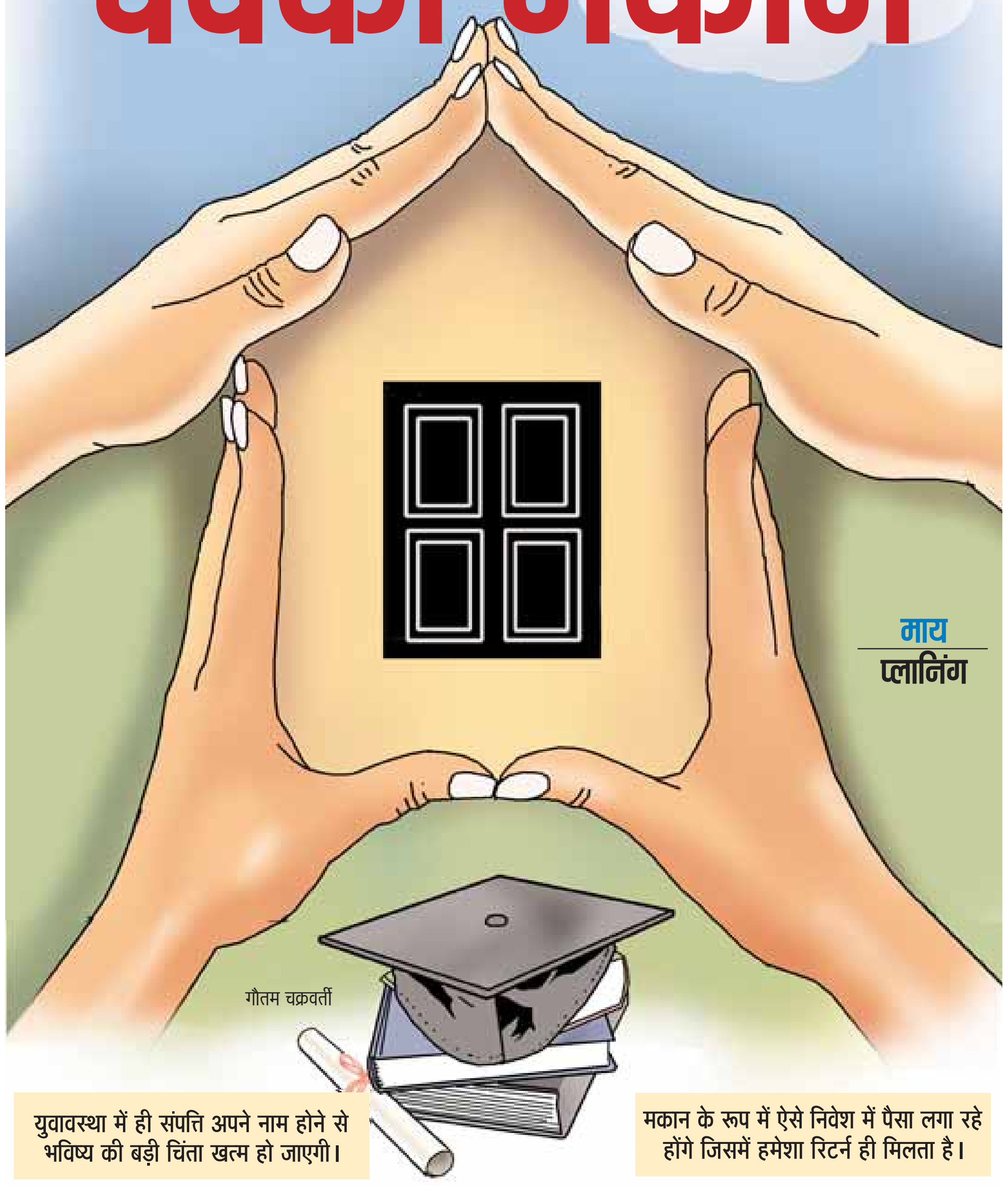

माय प्लानिंग

गौतम चक्रवर्ती

युवावस्था में ही संपत्ति अपने नाम होने से भविष्य की बड़ी चिंता खत्म हो जाएगी।

मकान के रूप में ऐसे निवेश में पैसा लगा रहे होंगे जिसमें हमेशा रिटर्न ही मिलता है।

अगर आप युवा है, खर्च करने के लिए पैसा भी है तो निश्चित रूप से रोजाना मार्केट में आ रहे नए-नए मोबाइल हैंड सेट के प्रति आकर्षित होंगे। यह भी हो सकता है कि आपको किसी कंपनी का कोई एलसीडी टीवी पसंद आ जाए। शायद आप लोन पर कार भी ले लें। लेकिन दो साल बाद आपके द्वारा खरीदे गए इन उत्पादों की कीमत घटकर आधी हो सकती है।

तो क्या कोई ऐसी चीज है जिसे आप आज खरीदें और कल उसकी कीमत दुगुनी हो जाए, या बल्कि शायद उससे भी अधिक? ऐसी चीज है घर, जमीन-जायदाद। हो सकता है बीच-बीच में ऐसे दौर भी आए जब मकानों या अचल संपत्ति की कीमतों में गिरावट आ जाए, लेकिन दीर्घावधि में इसमें बढ़ोतरी ही होती है।

तो सवाल यह है कि आप अपना पैसा कहां खर्च करें? मोबाइल, एलसीडी टेलीविजन, लैपटाप इत्यादि में खर्च करने की मनाही नहीं है, क्योंकि आपका शौक भी मायने रखता है। लेकिन अगर आप युवा हैं और मकान खरीदने के लिए भी अपना थोड़ा-सा पैसा बचा लेते हैं तो इसके कई लाभ आपको भविष्य में मिल सकते हैं।

बचेगा किराया :

यह तय है कि आपको कहीं न कहीं तो रहना ही है। अगर आपके पुरखों का मकान नहीं है तो आप किराये के मकान में रहेंगे। इससे आप हर माह किराये के रूप में एक बड़ी राशि खो देंगे और इसके बदले में आपको कोई रिटर्न भी नहीं मिलेगा। यदि आप अपने खुद के मकान में रहते हैं तो इसका मतलब है कि आप वह पूरी धनराशि बचा लेंगे जो किराये के रूप में दे रहे हैं। हो सकता है आपने जो हाउस लोन लिया है, उस पर किराये की तुलना में थोड़ा अधिक पैसा किस्त के रूप में (ईएमआई) देना पड़े, लेकिन इस पैसे से आप अपने लिए एक संपत्ति भी तो खड़ी कर रहे हैं, जो किराये के मकान में संभव नहीं था। संपत्ति भी ऐसी जिसकी कीमत समय के साथ बढ़नी ही है।

सधेगी मुद्रास्फीति :

शुरुआत में उच्च ईएमआई से आप भयभीत हो सकते हैं, लेकिन आप दूर की सोचेंगे तो यह भय जाता रहेगा। हाउस लोन (फ्लोटिंग रेट) के ब्याज में बढ़ोतरी के इस दौर में हो सकता है कई लोगों के अनुभव अच्छे नहीं रहे हो। उन्हें लग सकता है कि उन पर ईएमआई का बोझ काफी बढ़ गया है, लेकिन वे जरा मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी से तुलना करें। समय के साथ-साथ आपका वेतन भी बढ़ता जाता है, लेकिन मुद्रास्फीति व वेतन में बढ़ोतरी की तुलना में आपकी ईएमआई में हुई वृद्धि को मामूली ही माना जाएगा। दीर्घावधि में आपके कुल वेतन में ईएमआई का हिस्सा भी कम होता जाएगा। इसे एक उदाहरण से समझ सकते हैं। मान लीजिए आज आपका वेतन 20 हजार रुपए मासिक है और आपकी ईएमआई 5 हजार रुपए है। यानी आज ईएमआई आपके वेतन की 25 फीसदी है। दस साल के बाद आपका वेतन 50 हजार रुपए महीना हो जाएगा और आपकी ईएमआई मुश्किल से 7 या 8 हजार रुपए रहेगी। अब यह कुल वेतन का 14 या 16 फीसदी ही रह गई। इस तरह साल-दर-साल आपके द्वारा लिए गए होम लोन की ईएमआई वेतन के अनुपात में लगातार कम होती जाती है।

शुरुआती भार उठाने में आसानी :

युवावस्था में खर्चे कम रहते हैं। बच्चों की भारी-भरकम कालेज फीस नहीं देनी है और न ही लड़की की शादी की चिंता है। अगर शादीशुदा नहीं है तब तो खर्च और भी कम होंगे (यह बात सब पर लागू नहीं हो सकती, लेकिन आमतौर पर इस पर यकीन किया जा सकता है)। यानी फंडा यह है कि युवावस्था में आपके खर्च कम है, तो आप मार्जिन मनी व मकान की किस्तों का शुरुआती भार आसानी से उठा सकते हैं। फिर समय बीतने के साथ तो यह बोझ कम होना ही है।

निश्चित बचत की गारंटी :

आप युवा है और पैसा दिख रहा है तो खर्च होना भी लाजिमी है। ऐसे में अगर आप मकान खरीद लेते हैं तो ईएमआई के रूप में आपको एक निश्चित राशि हर माह देनी होगी। इसका मतलब यह है कि इस बहाने आप कम से कम कुछ राशि बचाकर अपने नाम एक संपत्ति तो बना रहे हैं। यह अचल संपत्ति होगी जिसमें किया गया निवेश कभी भी बेकार नहीं जाता है। इस प्रकार युवावस्था में मकान खरीदना बचत के साथ निवेश के रूप में टू-इन-वन का काम करेगा।

(लेखक न्यूयार्क में बिजनेस एनालिस्ट और वेबसाइट www.raagvamdatt.com के सलाहकार हैं।)

फायदे एक नजर में

- आज आप जो किराया दे रहे हैं, वह पूरा बचेगा। ईएमआई जरूर देनी होगी, लेकिन इसके बदले में कुछ साल बाद संपत्ति आपकी हो जाएगी।
- समय के साथ आपकी किस्त का बोझ वेतन के अनुपात में कम होता जाएगा।
- युवावस्था में खर्च कम होने से आप मकान खरीदने के शुरुआती खर्चे आसानी से उठा सकेंगे।
- हर माह ईएमआई के रूप में कुछ चुकाना ही होगा। यानी एक निश्चित बचत हो सकेगी।

सेवा भी निवेश भी

अरिंदम बोस

माय फंड

मनीषा बेलगांवकर

क्या आप देश, समाज या पर्यावरण की सेवा करना चाहते हैं? इसके लिए न तो आपको सेना में भर्ती होने या युद्ध लड़ने की जरूरत है और न ही खादी पहनकर अपने भाषणों से लोगों को जगाने की। आप निवेश करके भी ऐसा कर सकते हैं।

यह बात आपको विस्मित कर सकती है कि भला आप निवेश करके यानी पैसे कमाने की लालसा के साथ देश या समाज की सेवा कैसे कर सकते हैं? आप 'श्री फंडों' में पैसा लगाकर ऐसा कर सकते हैं। सोशल रिस्पांसिबल इन्वेस्टिंग का ही संक्षेप रूप है 'श्री'। ये फंड ऐसी कंपनियों में निवेश करते हैं जो सामाजिक दायित्व को समझती हैं। सामाजिक दायित्व का दायरा काफी व्यापक है, लेकिन इसमें भी मुख्य रूप से पर्यावरण, सामाजिक मसलों को सुलझाने की पहल और कार्पोरेट प्रशासन को शामिल किया गया है। इसे ईएसजी पैरामीटर कहा जाता है। जो कंपनियां इस पैरामीटर पर खरी उतरती हैं, उनमें ही 'श्री फंड' निवेश करते हैं।

विदेशों में सामाजिक दायित्व के साथ निवेश के ट्रेंड ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आंदोलन के साथ गति पकड़ी थी। अब खासकर पश्चिमी देशों में ये फंड काफी लोकप्रिय हैं, लेकिन भारत में इसकी शुरुआत हाल ही में हुई है। हमारे यहां ऐसा पहला म्यूचुअल फंड कुछ माह पहले एबीएन एम्ब्रो ने 'एबीएन एम्ब्रो सस्टेनेबल डेवलपमेंट फंड' (एएसडीएफ) नाम से शुरू किया है। 'श्री' फंडों में यह देश का इकलौता फंड है। इसने क्रेडिट रेटिंग एजेंसी क्रिसिल के साथ समझौता किया है जिस पर ऐसी कंपनियों को चुनने का जिम्मा है जो ईएसजी पैरामीटर पर खरी उतरती हैं। क्रिसिल द्वारा चुनी गई कंपनियों में ही एएसडीएफ अपने फंड का पैसा निवेश करता है।

कैसे फायदेमंद है फंड?

जब अधिक से अधिक लोग इस तरह के फंडों में निवेश करेंगे तो उस निवेश को हासिल करने के लिए भी अधिक से अधिक कंपनियां ईएसजी पैरामीटर पर खरी उतरने की कोशिश करेंगी। इस प्रतिस्पर्धा की बदौलत दुनिया के सामने पेश आ रही ग्लोबल वार्मिंग, कारखानों में मानवाधिकार संरक्षण, बाल श्रम और अन्य सामाजिक समस्याओं को सुलझाना आसान हो सकेगा। इस तरह के निवेश की प्रवृत्ति में इजाफा होने से शायद भविष्य में भोपाल गैस कांड जैसे हादसों के दोहराव से भी बचा जा सकेगा।

(लेखिका फिन आप्शंस, भोपाल में बिजनेस एनालिस्ट हैं)

कुछ तथ्य

विदेशों में इस तरह के फंडों की संख्या करीब 200 है। भारत में अब भी एएसडीएफ ही ऐसा इकलौता फंड है जो सामाजिक दायित्व के साथ निवेश को प्रोत्साहित करता है।

भारत में करीब 50 कंपनियां ऐसी हैं जो ईएसजी पैरामीटर यानी पर्यावरण, सामाजिक पहल व कार्पोरेट प्रशासन के मापदंडों पर खरी उतरती हैं।

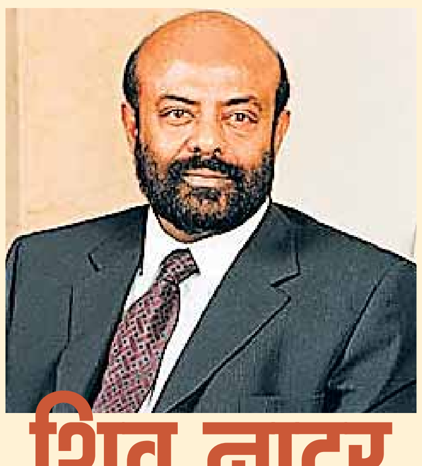

शिव नादर

चेयरमैन, एचसीएल टेक्नोलाजिस

जन्म : 1945, तमिलनाडु में
देश : अमेरिका में निवासरत एनआरआई
संपत्ति : 3.9 अरब डॉलर

माय जर्नी टु सक्सेस

वह हर व्यक्ति एचसीएल के नाम से जरूर वाफिक होगा जिसका कम्प्यूटरों से कभी वास्ता पड़ा हो। भारत का पहला पीसी बनाने वाली एचसीएल यानी हिंदुस्तान कम्प्यूटर लिमिटेड की स्थापना 32 साल पहले उस व्यक्ति ने महज दो लाख रुपए में की थी, जो आज करीब 4 अरब डॉलर संपत्ति का मालिक है। यह शख्स हैं शिव नादर।

अगस्त 1976 में शिव नादर ने जब अपने पांच मित्रों के साथ एक कम्प्यूटर कंपनी शुरू करने का एलान किया तो उनके अनेक शुभचिंतकों के गले यह बात नहीं उतरी। नादर ने दिल्ली क्लाथ मिल्स के कैल्यूलेटर विभाग में अच्छी-भली नौकरी छोड़कर नए प्रोजेक्ट पर दांव लगाया था। नादर ने जिस समय कम्प्यूटर बनाने के लिए कमर कसी थी, उस समय देश में उसका कोई विशेष बाजार नहीं था, लेकिन उन्होंने शायद दूर क्षितिज पर भविष्य को देख लिया था।

नादर की सफलता की यात्रा कंपनी की स्थापना के एक साल बाद ही शुरू हो गई जब वर्ष 1977 में तत्कालीन सरकारी नीतियों की वजह से आईबीएम ने भारत को अलविदा कह दिया। एचसीएल ने इस मौके को तुरंत लपकते हुए रिक्त स्थान को भरने की दिशा में काम करना शुरू कर दिया। कंपनी ने तीन साल बाद ही सिंगापुर में पैठ बना ली और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। वर्ष 1987 तक आते-आते नादर की एचसीएल 100 करोड़ रुपए का राजस्व अर्जित करने लगी थी। दो लाख रुपए से यात्रा शुरू करने वाली किसी भी कंपनी के लिए यह सफलता अद्भुत ही मानी जाएगी जिसका श्रेय नादर को जाता है।

> 'अगर आप लोगों को अधिकार संपन्न बनाना चाहते हो तो उनके हाथों में औजार दे दीजिए। बाकी काम वे खुद कर लेंगे।

एक कमरे में कंपनी शुरू करने वाले नादर की एचसीएल के आज विश्व भर में सौ से भी अधिक कार्यालय हैं और वह करीब 55 हजार लोगों को रोजगार दे रही है। फोर्ब्स ने नादर की संपत्ति 3.9 अरब डालर आंकी है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी हाथ आजमाया है। उनके 'एसएसएन ट्रस्ट' ने चेन्नई में एसएसएन कॉलेज आफ इंजीनियरिंग शुरू किया है जिसमें रिसर्च गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

जीवन के इस मोड़ पर

सुभाष लखोटिया

वरिष्ठ नागरिकों के लिए निवेश की योजना बनाना बेहद अहम है। उन्हें एक बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि वे निवेश में किसी अन्य की नकल नहीं करें। न ही वे अपने पास उपलब्ध सारा पैसा एक ही जगह लगा दें। वरिष्ठ नागरिक निवेश करते समय सुरक्षित विकल्प आजमाएं। कभी भी उस इंस्ट्रूमेंट में निवेश नहीं करें जिसमें अधिक रिटर्न मिलने की संभावना तो है, लेकिन साथ ही उसमें जोखिम भी अधिक है।

निवेश योजना के तीन सूत्र

1. **सावधि जमाएं :** बैंकों की सावधि जमाओं या वरिष्ठ नागरिक बचत योजना में निवेश बेहतर विकल्प है। इन दोनों में निवेश से वरिष्ठ नागरिक आसानी से 9 से 10.50 फीसदी तक रिटर्न हासिल कर सकते हैं। करमुक्त ब्याज आय हासिल करने के लिए डाकघर बचत योजनाओं में भी निवेश किया जा सकता है।
2. **शेयर में जोखिम :** वरिष्ठ नागरिकों को शेयर में निवेश नहीं करना चाहिए। अगर उन्हें शेयर से संबंधित इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करना ही है तो म्यूचुअल फंड्स में निवेश किया जा सकता है। इन म्यूचुअल फंड्स में भी वे फंड चुने जाने चाहिए जो इक्विटी व डेट मिश्रित हों।
3. **रियल एस्टेट :** रियल एस्टेट में निवेश अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ संयुक्त रूप से किया जाना चाहिए। यह समय बड़ी सम्पत्ति का निस्तारण कर ऐसा सुविधाजनक आवास लेने पर भी विचार करने का है ताकि आप रिटायरमेंट के पश्चात सुखी जीवन व्यतीत कर सकें। साथ ही अपनी अचल संपत्ति के लिए रिवर्स मोर्गेज पर भी विचार किया जा सकता है। रिवर्स मोर्गेज ऐसी अवधारणा है जिसमें बैंक आपकी संपत्ति को गिरवी रखने के बदले में अच्छा-खासा पैसा देता है। खास बात यह है कि यह राशि पूंजीगत लाभकर और आयकर से मुक्त होती है।

कर योजना के तीन सूत्र

1. **अलग-अलग फाइल :** वरिष्ठ नागरिक को चाहिए कि वे अपने घर के प्रत्येक सदस्य की अलग से टैक्स फाइल बनवाएं ताकि मौजूदा आयकर अधिनियम के तहत अधिकतम छूट का फायदा मिल सके। वर्तमान में एक लाख 50 हजार रुपए की वार्षिक आय वाले व्यक्ति को किसी भी प्रकार का कर नहीं देना है। महिलाओं के लिए यह सीमा एक लाख 80 हजार रुपए और वरिष्ठ नागरिकों के लिए दो लाख 25 हजार रुपए है। (वरिष्ठ नागरिक उसे माना जाता है जिसने 65 साल पूरे कर लिए हो।)
2. **मांगें करमुक्त भत्ते :** वरिष्ठ नागरिक अब भी कहीं नौकरी कर रहे हैं, तो उन्हें अपने नियोक्ता से करमुक्त भत्ते व अन्य लाभ देने का आग्रह करना चाहिए। इसके अलावा यदि वरिष्ठ नागरिक किसी व्यापार या पेशे से आय हासिल कर रहा है तो इस आय को अर्जित करने के लिए उसके द्वारा किए गए तमाम खर्च भी पूर्णरूपेण कटौती के योग्य होंगे। इसकी कोई उच्च सीमा भी नहीं है।
3. **कानून का उठाएं लाभ :** वरिष्ठ नागरिकों को आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत मिलने वाले लाभों का भी पूरा फायदा उठाना चाहिए। इस धारा के तहत बीमा प्रीमियम, होम लोन के पुनर्भुगतान, बैंक सावधि जमाएं, वरिष्ठ नागरिक बचत योजना इत्यादि में एक लाख रुपए तक के निवेश पर कर राहत हासिल की जा सकती है। इसी प्रकार धारा 80-डी के तहत वरिष्ठ नागरिक मेडीक्लेम पालिसी में कटौती का लाभ उठा सकते हैं।

(लेखक कर एवं निवेश विशेषज्ञ हैं)

माय एडवाइज

वसीयत की योजना

सभी वरिष्ठ नागरिकों को अपनी वसीयत भी जरूर तैयार करवा लेनी चाहिए। कोई भी व्यक्ति अपनी वसीयत को कितनी भी बार बदल सकता है। वसीयतनामा के बारे में कुछ प्रमुख तथ्य इस प्रकार हैं:

- वसीयत सफेद कागज पर तैयार की जाए।
- स्टाम्प पेपर जरूरी नहीं है।
- वसीयत को रजिस्टर करवाया भी जा सकता है और नहीं भी। वैसे रजिस्टर करवाना बेहतर रहेगा।
- वसीयत की वीडियो रिकार्डिंग भी करवा ली जाए।
- वसीयत को लागू कौन करेगा, यह भी पहले ही तय कर लें। इसके दो साक्षी भी होने चाहिए।